भूमि का अध्ययन एवं वर्णन

(Study and description of ground)

भूमि के अध्ययन एवं वर्णन का उद्देश्य है कि विभिन्न प्रकार की भूमि में आकृतियों की खोज करके उनका सैनिक महत्व के दृष्टिकोण से, क्षेत्रकला के लाभ के लिये उचित प्रयोग करें ताकि शत्रु के फायर से अपने सैन्य दलों की सुरक्षा हो सके।

भूमि का अध्ययन

(Study of Ground)

पृथ्वी की सतह पर विभिन्न प्रकार की भूमि होती है और किसी भी सैन्य गतिविधि को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिये भूमि का अध्ययन होना बहुत आवश्यक है। सामान्यतः भूमि को हम निम्नलिखित भागों में विभक्त कर सकते हैं, जिनके भिन्न-भिन्न लाभ व हानियाँ है-

1. **सपाट और खुली भूमि (Flat and Open Ground) -** यह प्राकृतिक आड़ या रुकावट से रहित दूर तक फैली हुई भूमि होती है।इसमें तीव्र गतिशील एवं उचित देखभाल की जा सकती है किंतु शत्रु भी हमारे विरुद्ध यही लाभ उठा सकता है। यदि इस भूमि में कहीं पेड़ - पौधे आदि मिल जाये तो छिपाव में सरलता हो जाती है।हवाई आक्रमण, टैंको के आक्रमण, बमबारी और मुठभेड़ की निकटतम लड़ाई (Close quarter Battle, CQB) में यह भूमि उपयोगी सिद्ध होती है।
2. **टूटी-फूटी भूमि (Broken Ground) -** ऐसी भूमि छिपाव की दृष्टि से उत्तम है जिस पर टैंक भी आसानी से नहीं बढ़ पाते हैं।नदी- नालें, दरारे, खाइयाँ ,गड्ढों आदि से युक्त इस भूमि में शत्रु की दृष्टि तथा फायर से सुरक्षा तो मिलती है लेकिन इस भूमि से शत्रु की उचित देखभाल तथा तीव्र गतिविधियाँ संभव नहीं है।
3. **ऊंची भूमि (High Ground) -** ऐसी भूमि जो तुलनात्मक दृष्टि से आस-पास की भूमि से ऊँची हो, ऊँची भूमि कहलाती है। इस भूमि पर से उचित देखभाल तथा शत्रु पर तीव्र प्रभावकारी फायर करना संभव है पर इसे शत्रु आसानी से पहचान लेता है यहां शत्रु के हवाई हमले से भी बचाव संभव नहीं है। सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से यह भूमि तब तक सुरक्षित नहीं है जब तक कि पास की ऊंची भूमि भी अपने अधिकार में न हो।
4. **नीची भूमि (Low Ground) -** इस तरह की भूमि तुलनात्मक रूप से थोड़ी नीचे किंतु गहरी नही होती है।यह भूमि शत्रु की दृष्टि से छिपाव के लिये तो उत्तम है किंतु प्रतिरक्षा के लिये यह तब तक उपयोगी नहीं होती जब तक आस-पास कोई ऊँची भूमि न हो क्योंकि शत्रु की गतिविधि का पता नहीं लग पाता और यहां हम अपने हथियारों का उचित प्रयोग भी नहीं कर पाते हैं।
5. **छिपी या धंसी भूमि (Dead Ground) -** भूमि का ऐसा भाग जिसे फायर करने वाला अपने मोर्चे से देख नहीं पाता, छिपी भूमि कहलाती है इस भूमि पर सैन्य दल शत्रु की दृष्टि एवं फायर से बचे तो रहते हैं किंतु अपनी गतिविधि एवं देखभाल में बाधा पड़ती है। प्रायः ऐसे क्षेत्रों को शत्रु तोपखाने व मार्टर को प्रतिरक्षात्मक फायर के लिये चुनता है।

6. **सामने की ढलान (Forward Slope) -** पहाड़ी का वह ढलान जो अपनी ओर हो, ऐसे क्षेत्र से फायर तथा देखभाल करना आसान होता है, किंतु शत्रु की नजर में रहते हैं । ऐसी भूमि पर शत्रु के टैंक तीव्रगति से नहीं चल सकते।
7. **पीछे की ढलान (Reverse Slope) -** पहाड़ी का ऐसा ढलान जो शत्रु की ओर हो, ऐसे क्षेत्र से शत्रु का अवलोकन व फायर करना कठिन होता है। साथ ही शत्रु की दृष्टि व फायर से अपनी स्थिति को छिपाना भी कठिन होता है। इस पर चलने की गति भी मंद होती है।
8. **खड़ी फसल (Standing Corps) -** ऐसी भूमि जहाँ बड़े क्षेत्र में खड़ी फसल हो, वहाँ शत्रु से छिपाव तो मिलता है पर गतिविधियाँ मुश्किल होती है और सामने के क्षेत्रों की देखभाल करना भी मुश्किल होता है।
9. **पेड़, जंगल, बाढ़ और झाड़ियाँ (Trees, Woods, Hedges and Bushes) -** ऐसी भूमि पर अच्छी फायर की स्थिति प्राप्त होती है तथा अच्छा छिपाव भी मिलता है किंतु शत्रु ऐसे क्षेत्रों पर कड़ी निगाह रखता है, साथ ही बाढ़ व झाड़ियों की स्थिति में शत्रु के फायर से बचाव नहीं मिलता। जंगल प्रायः मानचित्र पर अंकित होते हैं इसलिए यह शत्रु के तोपखाने के लिये अच्छे लक्ष्य सिद्ध होते हैं।
10. **इमारतें, दीवारें तथा अन्य अप्राकृतिक आकृतियाँ (Building,Wall and other Artificial features) -** ऐसी भूमि पर शत्रु के फायर से तो रक्षा है किंतु जब ऐसे प्राकृतिक अवरोध क्षेत्र में गिने चुने होते हैं तो शत्रु के लिये लक्ष्य भी सिद्ध होते हैं।

भूमि का विवेचन

(Description of Ground)

युद्ध भूमि के अन्दर सैनिकों को क्षेत्रकला का कुशल प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये यह अत्यावश्यक है कि सैनिक में किसी भी प्रकार की भूमि को भली प्रकार देखने समझने तथा विवेचन करने की योग्यता है। कमांडर को युद्ध क्षेत्र आदि की जानकारी देने के लिए उसे दिशा सामान्य रेखा (General Line of Direction), दायां व बायाँ चाप (Right and Left Arc), निर्देश चिह्न (Referene Point) आदि के स्थान अथवा वस्तु के नाम, दिशा व दूरी बताना चाहिए ताकि किसी भी समय अपने सैन्यदल के जवान उस स्थान का नाम सुनकर ही उसे भलीभाँति समझ लें। भूमि का विवेचन मुख्यतः निम्न प्रकार से किया जाता है -

1. सामान्य दिशा का निश्चय करने के बाद सीमायें (Bounds) बतानी चाहिए।पहले बांयी सीमा फिर दाहिनी सीमा। इसके लिए भी प्रत्येक सीमा पर एक या दो प्रमुख परिचय चिह्न प्रयोग किए जाते हैं।

   उदाहरण (A) - "नं. 1 सेक्शन - आधा बांये 300 मन्दिर आधा बांदे 600 - पुल पुल के दाहिने किनारे मन्दिर के दाहिने किनारे होते हुए सेक्शन के सबसे बांये वाला जवान के बांये तक सेक्शन की बांयी सीमा।"

   (B) नं. 1 सेक्शन आधा बांये 300 मन्दिर मन्दिर के दाहिने किनारे से सेक्शन के बांये वाला जवान के बांधे तक सेक्शन की बांयी सीमा।"

2. दाहिनी सीमा का विवरण भी इसी प्रकार किया जा सकता है परन्तु दाहिनी सीमा बताते समय जो भी परिचय चिह्न सहायक के रूप में लिए जायें वे 'सामान्य दिशा रेखा' तथा बांयी सीमा के परिचय चिह्नों से भिन्न होने चाहिए।